ॐ श्रीरामाय नमः ।। ॐ पहले आरती उ
ष को माला । कालीनाग नथ पी·
श्रीकृष्ण गोपाला । हरहर भक्तक
रो ।। ठाकुर ध्यान धरे ।। शिव जोतिर
न करो ।। ब्रह्मा वेद पढे । यम त्रास ।

आ
८

नदीजै ॥ आरतीकीजै ॥ राजारामचं
द्रकीजै ॥ १ ॥ हमरीआरतीदेवकीं
नंदन ॥ भक्तउदारणअसुरनिकं
दन ॥ हरहरभक्तकरो ॥ ठाकुरध्या
नधरो ॥ शिवजीतेरतनकरो ॥ आला

वेदपढे ॥ यमत्रासनदीजे ॥ आरती
कीजै ॥ राजारामचंद्रकीजै ॥ ५ ॥ नोस
वीआरती ॥ त्रिभवनमोहे ॥ गाकहड
सिंघासनराजारामचंद्रसोवे ॥ रु
द्रभगतकोदाकरध्यानधरे ॥

श्री
२

शिवजीतिनतकुरो॥ब्रह्मावेदपढे
यमत्रासनदीजे॥श्रीरतोकोजे
राजारामचन्द्रकोजे॥४॥चौपैयाः
नोचोदसपरजा॥एकतारायणा
स्वामीअवरनदीहजा॥साहसम

क्रै करो ॥ ठाकुर ध्यान धरो ॥ शिवजी
नित करो ॥ ब्रह्मा वेद पढै ॥ यमत्रा
स न दीजै ॥ आरती कीजै राजा राम
चंद्र कीजै ॥ ४ ॥ पंचमी आरती राम
को भावै ॥ सीताराम जी के हर हर

आ
३

नामजसगावै॥ हरहरभक्तकेरा॥
ठाकुरध्यानधरै॥ शिवजीनितक
रो॥ ब्रह्मावेदपडै॥ यमत्रासनदीजै
आरतीकीजैराजारामचंद्रकोजै
घटवोआरतीजोगहैसुनावै॥ ज

३

सुमरत जो भैन होक्षावे ॥ हर हर यम कु
करो ॥ ठाकुर ध्यान धरो ॥ शिव जो तिर
न करो ॥ खुलावे ॥ यम त्रास न होजे ॥ भ्रा
रतो कीजे राजा राम चंद्र कीजै ॥ ६
सम सी त्रा रती कटै मैं होरा ॥ भरा

श्री
४
५

नकानहरहादासकबीरा॥हरहर
भक्तकरो॥ब्रह्माध्यानधरो॥शिव
जीनितनृतकरो॥ब्रह्मावेदपढो॥यम
वासनदीजे॥आरतीकीजेराजारा
मचंद्रकीजे॥७॥अष्टमीआरतील

काशे ने रामचंद्र जो आवे ॥ सब संतन तो मे
लक स्मे गलगावे ॥ ६ ॥ इह भगत को ता
ठाकुर ध्यान धरे ॥ शिवजी ति रतन कु
रे ॥ ७ ॥ बाला ॥ यम शुभ मन दे जे आरती को मे
राजा रामचंद्र को जे ॥ ८ ॥ नवमी आरती

श्रा
५

रामनवमीश्रावै॥ममममृदङ्गबाजाव
जै॥घरदसरथकौतिवनबाजे॥द्वारह
रभक्तकरौ॥ठाकुरध्यानधरौ॥शिवजो
निरतनकरौ॥ब्रह्मावेदपडे॥यमब्राह
नदीजे॥आरतीकीजैराजारामचं ॰

इकीजै ॥ ९ ॥ इतिश्रीठाकुरजी का आ
रती संपूर्णम् ॥

66


श्री रघुवीर पुस्तकालय
सं.
नं.
मंदिर श्रीरघुनाथ जी